P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा जगत के नायक पं0 मदन मोहन मालवीय जी

Pt. Madan Mohan Malviya, The Hero of The Education World

Paper Submission: 07/06/2021, Date of Acceptance: 14/06/2021, Date of Publication: 24/06/2021

दयाशंकर सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
समजाशास्त्र विभाग,
सकलडीहा पी.जी.कालेज,
सकलडीहा, चन्दौली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पं0 मदन मोहन मालवीय जी हम सभी के प्रेरणा स्रोत है। उनके 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित कर उनके द्वारा किये गए अभूतपूर्व योगदानों का सम्मान किया है। पं0 मदन मोहन मालवीय जी का जन्म के समय भारतीय संस्कृति और भारतीयता हर एक क्षेत्र में विनाश के कगार पर पहुँच चुकी थी। ऐसे समय में पं0 मदन मोहन मालवीय जी जैसे महापुरुष का प्रादुर्भाव हुआ।

Pt. Madan Mohan Malviya ji is the source of inspiration for all of us. On the occasion of his 150th birth anniversary, the Government of India honored him with the Bharat Ratna in recognition of his unprecedented contributions. At the time of the birth of Pt. Madan Mohan Malaviya, Indian culture and Indianness had reached the verge of destruction in every field. At such a time a great man like Pt. Madan Mohan Malviya ji appeared.

मुख्य शब्द : नायक , शिक्षा जगत , प्राचीन , भारतीय आयुर्वेद , दीक्षान्त भाषण

Nayak A Education World A Ancient A Indian Ayurveda A Convocation Speech.

प्रस्तावना

21वीं सदी में शिक्षा पर एक अंतरराष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट 'लर्निंगरू द ट्रेजर विदिन' में कहा गया है कि इस सदी में बहुत से तनावों और द्वंद्वों से हमें गुजरना पड़ेगा, जैसे– वैश्विक और स्थानीय, सार्वभौमिक व वैयक्तिक, परंपरा और आधुनिकता, दीर्घकालिक व अल्पकालिक सोच, प्रतियोगिता और सहयोग, ज्ञान का असीमित प्रसार और मानव की ग्राह्य क्षमता, आध्यात्मिकता व भौतिकता। इसलिए इस सदी की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे ये तनाव और द्वंद्व कम किए जा सकें, साथ ही संतुलन बनाए रखा जा सके।

साहित्यावलोकन

विजय कुमार 2008 ने महामना मदन मोहन मालवीय के सामाजिक और राजनीतिक विचार में लिखा है कि महामना मानते थे कि 'जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र हो। प्रदीप चावला 2019 ने मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन में लिखा है कि मदन मोहन मालवीय जी कहा करते थे की व्यक्ति और समाज के अभ्युदय के लिए बौधिक विकास से भी अधिक महत्वपूर्ण है चरित्र का निर्माण और उसका विकास। यह विश्वविद्यालय केवल अर्जित ज्ञान के स्तर को प्रमाणित कर डिग्रियां देने वाली संस्था मात्र न होकर सुयोग्य और सद्चरित्र नागरिकों की पौधशाला होगा।' अपने हृदय की महानता के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में श्महामनाश के नाम से पूज्य मालवीयजी को संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। करुणामय हृदय, भूतानुकम्पा, मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर, मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वासपूर्वक दूसरों को असम्भव प्रतीत होने वाले कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीयजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन का उद्देश्य

विश्व में जब भी ऐसे भयंकर परिस्थितियाँ आती हैं तब कोई न कोई महापुरुष जन्म लेकर हमारा मार्गदर्शन करता है। छात्रावस्था से ही उनके जीवन में समाज, संगठन और देश प्रेम की भावना मुखर हो उठी थी। पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यद्यपि वे अर्थोपार्जन में लग गए परन्तु समाज सेवा और देश प्रेम की लगन को कभी धूमिल नहीं होने दिया। उनके निर्मल चरित्र की तेजस्विता तथा हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं उर्दू भाषाओं के प्रगाण पाण्डित्य से उनकी कीर्ति शीघ्र ही चारो ओर फैलने लगी।राष्ट्र, धर्म, समाज और जाति के हित में लोक साधना जीवन के आरम्भिक काल से शुरू हो चुकी थी।**पं0** मदन मोहन मालवीय जी व्यक्तिगत सुखों को त्याग कर राष्ट्र के हित में कष्टमय जीवन को अपनाया। शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी सन् 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। इस विश्वविद्यालय की कल्पना एवं स्थापना महामना मालवीय जी के अदम्य उत्साह अविचल निष्ठा, निष्काम त्याग एवं अद्वितीय तपस्या का परिणाम है। मालवीय जी इस विश्वविद्यालय में प्राच्य और अर्वाचीन विद्याओं का संगम तथा विश्वविज्ञान का विद्या–मन्दिर बनाना चाहते थे।वर्तमान सभ्यता की अनुकरणीय तथा लाभदायक बातों के साथ भारतीय सभ्यता का उचित सामंजस्य उनका उद्देश्य था।

विषय विस्तार

पं जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है,अपने नेतृत्वकाल में हिन्दू महासभा को राजनीतिक प्रतिक्रियावादिता से मुक्त रखा और अनेक बार धर्मो के सहअस्तित्व में अपनी आस्था को अभिव्यक्त किया। जवाहरलाल नेहरू ने मदन मोहन मालवीय को एक महान आत्मा कहा जिन्होंने आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता की नींव रखी थी ।महात्मा गांधी मालवीय जी को भारत निर्माता की संज्ञा दी।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का विद्यार्थियों के लिए संदेश 2008

में डॉ विश्वनाथ पांडेय के अनुसार महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी भारत की तंत्र संघर्ष के युग के प्रदीप नक्षत्र है।

जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि मालवीय जी उन लोगों में थे जिन्होंने कांग्रेस से शुरू हुई हमारे राजनीतिक आंदोलन और खास पहचान रहे हैं उसे शुरू करने में बनाने में और बढ़ाने में मालवीय जी का बहुत बड़ा हिस्सा रहा।राजर्शी पुरुषोत्तम दास टंडन के विचार में मालवीय जी आदर्श मनुष्य थे जिन्होंने राजनीति और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में परिवर्तन युग प्रवर्तक का काम किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रफुल्ल चंद्र राय का विचार है कि गांधीजी के बाद कोई दूसरा ऐसा मनुष्य मिलना कठिन है जिसने इतना अधिक त्याग किया हो और बहुमुखी कार्यों का एक ऐसा प्रमाण पत्र जैसा कि मालवी जी।

पं0 मदन मोहन मालवीय जी इस विश्वविद्यालय में "प्राचीन भारतीय आयुर्वेद के साथ अर्वाचीन शल्यशास्त्र की शिक्षा का मेल, आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण तथा उनपर अनुसंधान, विभिन्न विषयों पर प्राच्य और अर्वाचीन ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शनशास्त्र, साहित्य और इतिहास के गम्भीर अध्ययन अध्यापन के साथ साथ आधुनिक मनोविज्ञान, नीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि का अध्ययन अध्यापन, वेद, वेदान्त तथा संस्कृत साहित्य और वांगमय की शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान विज्ञान, धातु विज्ञान, खनन विज्ञान, विद्युत इंजीनियरी, यांत्रिक इंजीनियरी, कृषि विज्ञान का अध्ययन इसकी विशेषता "[1]

शिक्षा के क्षेत्र में पं0 मदन मोहन मालवीय जी की अमर सेवायें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विद्यमान हैं।उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए धन–संचय हेतु राज–प्रसादों से लेकर झोपड़ियों तक अपनी झोली फैलाई। उनके आकर्षक व्यक्तित्व, सौम्य, स्वभाव तथा मृदुवाणी ने जनता को ऐसा मन्त्रमुग्ध किया कि देश के न केवल राजे–महाराजे बल्कि सेठ साहुकारों तथा अमीर उमरावों ने भी इस यज्ञ में आहुति दी।इस यज्ञ में निर्धन जनता ने भी मुक्तहस्त सहायता की। महामना जी का यह विश्वास था कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिए आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिए। पराधीनता से मुक्ति के लिए यह आवश्यक था कि इस विशाल देश में शिक्षा का व्यापक रूप से प्रसार किया जाए।

महामना मालवीय जी मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम के लिए उपयुक्त मानते थे। मालवीय जी विश्वविद्यालय को चरित्र विकास का साधन मानते थे। धर्म और भारतीय संस्कृति पर उनकी अटूट श्रद्धा थी। धर्म दर्शन तथा कला के पुजारी महामना में अपूर्व दूरदर्शिता थी।उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करते समय कला और विज्ञान के व्यापक महत्व को समझकर अपनी शिक्षा नीति निर्धारित की थी। वे विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय दर्शन, साहित्य तथा कला की शिक्षा के साथ ही विज्ञान तथा प्राविधिकी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करते रहे। वे विज्ञान और कला को एक दूसरे के पूरक मानते थे।राष्ट्र की कायाकल्प के लिए प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक और घरेलू लघु उद्योग की शिक्षा से लेकर बड़े उद्योगों तक की शिक्षा पर बड़ी गंभीरता से चिन्तन करते थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में उन्होंने कहा था – "विद्यार्थियों को इस योग्य बना दिया जाना चाहिए कि वे किसी न किसी उपाय से अपना जीविकोपार्जन कर सकें। हाईस्कूल की शिक्षा का अन्य देशों की शिक्षा की भाँति तभी सफल मानी जा सकती है, जब वह विद्यार्थियों को अर्थोपार्जन के योग्य बनाने वाली हो।"[2]

पं0 मदन मोहन मालवीय जी जी 26 जनवरी, 1920 के दीक्षान्त भाषण में उन्होंने कहा था " स्कूलों में

ही नहीं, विश्वविद्यालयों तथा उच्च श्रेणियों में भी देशी भाषाओं के माध्यम द्वारा शिक्षा–व्यवस्था होनी चाहिए।संसार में कोई भी ऐसा देश नहीं है, जहाँ प्रारम्भिक तथा उच्च श्रेणियों की शिक्षा के लिए मातृभाषा का प्रयोग न किया जाता हो। हम लोगों को भी शिक्षा का माध्यम अपनी भाषा को ही बनाना चाहिए।.....मातृभाषा को माध्यम बनाने के बाद क्रमशः स्वतः ही पाठ्य सामग्रियों का प्रकाशन होने लगेगा और भाषा का द्रुत गति से विकास संभव हो सकेगा।"[3]

महामना जी छात्रों के चरित्र–निर्माण हेतु नियम व अनुशासन पर भी जोर देते थे। उनका सहज स्नेह, वात्सल्य और सभी के लिए हित कामना, स्वतः लोगों को आकर्षित करता था। उनके निकट मात्र जाने से एक विशेष प्रकार का हृदय–परिवर्तन हो जाता था। छात्रों के संगठन को प्रोत्साहन देते थे। किसी नैतिक उद्देश्य के लिए आन्दोलनों में भाग लेने हेतु किसी भी छात्र को जाने से नहीं रोकते थे। वे स्वतन्त्र और सन्तुलित जीवन के हिमायती थे। विश्वविद्यालय में शिक्षण और ज्ञानार्जन के अलावा मनुष्यों के चरित्र निर्माण पर अधिक ध्यान दिया जाता था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निकले हुए छात्र, अध्यापक, साहित्यकार, वकील, इंजीनियर समाज–सेवी के रूप में देश विदेश में चारों ओर छा गए हैं।

पं0 मदन मोहन मालवीय जी की प्रेरणा और उनके व्यक्तित्व के फलस्वरूप ही यह संभव हो सका है। वे चाहते थे कि छात्र और छात्राएँ अज्ञान के अन्धकार से निकल कर ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर उत्तरोत्तर विकास करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर हों–"जब यह विश्वास हो जाएगा कि परमात्मा घट–घट में व्यापी है, किसी को तकलीफ न देनी चाहिए, उस समय न तो किसी से लड़ाई होगी और न झगड़ा। उस समय सुख एवं शान्ति का राज्य होगा। मनुष्य का कल्याण होगा।"[4] शिक्षा का उद्देश्य रचनात्मकता या सृजनशीलता भी है, इससे अनुप्रेरित होकर ही युवा वर्ग अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए राष्ट्रीय निर्माण में अपना योगदान दे सकता है। मालवीय जी करूणा और सौहार्द के प्रतिमूर्ति थे। सभी मनुष्यों के प्रति उनका व्यवहार कोमल, मधुर और अनुग्रहपूर्ण था। वे अपने नौकरों के सुख–सुविधा का ध्यान रखते थे तथा अपने कारण उन्हें कष्ट नहीं देते थे। एक बार पटना के प्रसिद्ध वैद्य पण्डित ब्रजबिहारी चौबे जी ने मालवीय जी को काढ़ा पीने की सलाह दी थी। उसे तैयार करके ठीक समय पर पिलाने के लिए नौकर को प्रातः काल चार बजे उठना पड़ता था। उसे इतना कष्ट देना अनुचित समझकर मालवीय जी ने काढ़ा पीना ही बन्द कर दिया। मालवीय जी ने रामनरेश जी से कहा था 'रामनरेश जी हम तो गरीब आदमी हैं इससे गरीब के प्रति हमारी सहानूभूति स्वाभाविक है नौकरों को मैं कुटुम्ब से भिन्न नहीं समझता। मेरे यहाँ नौकर के साथ जैसा व्यवहार होता है, वैसा धनी 'परिवारों में नहीं होता।'[5]

मानवता के प्रति मालवीय जी का प्रेम मानव मात्र तक ही सीमित नहीं था वह प्राणी मात्र के लिए भी था। गौ सेवा में उन्हें विशेष आनन्द आता था, लेकिन उनका प्रेम गौ सेवा तक ही सीमित नहीं था। सभी जीवों पर भी उनकी दया दृष्टि थी। इस सम्बन्ध में एक रोचक घटना पण्डित राम नरेश त्रिपाठी को सुनाई थी– 'बिछौने पर एक चींटी' चढ़ आई थी, उसे पकड़कर मैं नीचे उतार देना चाहता था पर वह हाथ आती ही न थी। इधर पकड़ने जाता तो उधर भाग जाती। अपने बचाव के लिए उसका प्रत्येक बार प्रयत्न बड़ा ही प्रिय लग रहा था। एक चींटी में भी जीवन रक्षा का वैसा ही उद्योग है जैसा प्रत्येक प्राणी में है सब में समान जीव है।[6]

पं0 मदन मोहन मालवीय जी की ईश्वर पर उनकी अचल अगाध श्रद्धा थी। नित्य नियमित रूप से उसकी अराधना तथा सदा उसका स्मरण करते थे। बल द्वारा दूसरे धर्मों के लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित करना, झूठे उपदेशों, भाषणों से दूसरे सम्प्रदाय के धार्मिक परिवर्तन का वे पूर्णतः विरोध करते थे। वे सनातन धर्मी थे, पर उनका सनातन धर्म संकुचित नहीं था। वे सिक्खों के बीच बैठते थे, उनके गुरूओं की वीरता का वर्णन करते थे। मुसलमान और ईसाइयों की सभा में भी जाते थे। वे छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। एक सनातनीय और परम्परावादी ब्राह्मण परिवार के होते हुए भी हरिजनों के प्रति उनके हृदय में कोई दुराव न था। उनके प्रति अपनी मानवतापूर्ण भावना के कारण गाँधी जी के हरिजनोद्धार कार्यक्रमों में सदैव सहभागी रहे। वे समान रूप से सभी धर्मों, धर्म ग्रन्थों, धर्म गुरूओं एवं सभी धर्मनिष्ठ व्यक्तियों काआदर करना अपना कर्तव्य समझते थे। वे कहते थे कि "जब मै किसी गिरजा या मस्जिद के पास से गुजरता हूँ, तब मेरा सिर सम्मान से झुक जाता है"[7]

पं0 मदन मोहन मालवीय जी की श्रीमद्भागवत में दृढ़ निष्ठा थी। स्वदेशी आन्दोलन के प्रवर्तक भी थे। इन्होंने 16 वर्ष की आयु से जीवन पर्यन्त विदेशी वस्त्रों का परित्याग किया था। सन् 1881 में स्वदेशी आन्दोलन का व्रत लेकर देशी उद्योग धन्धों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रयाग में 'देशी तिजारत कम्पनी' की स्थापना कर स्वदेशी आन्दोलन को सामाजिक एवं राजनैतिक मंच पर लाने का अभूतपूर्व प्रयास किया। उनके विचार में स्वदेशी आन्दोलन अपनी सांस्कृतिक पहचान, स्वतंत्रता और आर्थिक सुरक्षा से जुड़ा आन्दोलन था। गाँधी जी ने कहा था –"मैं मालवीय जी से बड़ा देशभक्त किसी को नहीं मानता। मैं सदैव उनकी पूजा करता हूँ।काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रजत जयन्ती (वसन्त पंचमी, 21 जनवरी, 1942) के अवसर पर महात्मा गाँधी जी छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा था– "मालवीय जी महाराज के निकट रह कर भी अगर आप उनके जीवन से सादगी, त्याग, देशभक्ति, उदारता और विश्वव्यापी प्रेम आदि सद्गुणों को अपने जीवन में अनुकरण न करे ।

निष्कर्ष

पं0 मदन मोहन मालवीय जी का व्यक्तित्व अद्वितीय है। अपने देश वासियों के बहुविध उत्कर्ष के लिए उन्होंने 50 वर्ष से अधिक समय तक अनवरत तपस्या करते रहे। मालवीय जी के व्यक्तित्व में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की विकसित भारतीय संस्कृति का सहज स्वरूप परिलक्षित होता है। इस प्रकार मालवीय जी की सेवायें अनन्त हैं। मालवीय जी के राष्ट्र के अतिरिक्त विश्व समुदाय के उन्नति एवं चरित्र निर्माण के लिए किए गए प्रयासों का आकलन असीमित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महामना मदन मोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व पृ0 623।*
2. *चतुर्वेदी सीताराम – महामना पं0 मदन मोहन मालवीय 26 जनवरी, 1920 के दीक्षान्त भाषण, पृ0 47।*
3. *चतुर्वेदी सीताराम – महामना पं0 मदन मोहन मालवीय का0 हि0 वि0 वि0 – दीक्षान्त भाषण 26 जनवरी, 1920, पृ0 42।*
4. *अग्रवाल, सं0 वासुदेश शरन – 'महामना के लेख और भाषण पृ0 184।*
5. *राम नरेश त्रिपाठी – मालवीय जी के साथ तीस दिन पृ0 163।*
6. *राम नरेश त्रिपाठी – मालवीय जी के साथ तीस दिन, पृ0 81।*
7. *लाहौर में भाषण – 28 जून, सन् 1932।*